

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में "ओरल हेल्थ इनइक़लिटीज़ इन इंडिया: लर्निंग फ़्रॉम द पास्ट एंड पेविंग द वे फॉर द फ्यूचर" विषय पर सेमिनार आयोजित

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के दंत चिकित्सा संकाय ने मंगलवार, 27 फरवरी को संकाय के पुस्तकालय हॉल दंत चिकित्सा संकाय, जामिइ में "ओरल हेल्थ इनइक़लिटीज़ इन इंडिया: लर्निंग फ़्रॉम द पास्ट एंड पेविंग द वे फॉर द फ्यूचर" पर राष्ट्रीय स्तर का सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का आयोजन भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर अभिषेक मेहता को प्रदान किए गए वित्तीय अनुदान की मदद से किया गया था। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता दंत चिकित्सा संकाय के डीन प्रो. (डॉ.) । केया सरकार ने की और कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर जीएम सोगी, प्रिंसिपल, एमएम डेंटल कॉलेज, अंबाला (हरियाणा) थे।

अतिथि व्याख्यान देने के लिए बड़ी संख्या में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली से डॉ. हर्ष प्रिया के पहले अतिथि व्याख्यान से हुई। उन्होंने दर्शकों को भारतीय आबादी में मौखिक रोगों के बोझ को कम करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत भारत सरकार द्वारा की गई पहल से अवगत कराया। मौजूदा स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में एकीकृत, व्यापक मौखिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा 2006 में राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू किया गया था।

दूसरा व्याख्यान प्रो. चन्द्रशेखर जानकीराम, विभागाध्यक्ष, सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सा, स्कूल ऑफ डेंटिस्ट्री, अमृता विश्वविद्यालय, कोच्चि, केरल द्वारा दिया गया। उन्होंने दर्शकों को यह समझने में मदद की कि मौखिक स्वास्थ्य असमानताओं का क्या मतलब है। उन्होंने बताया कि अधिकांश देशों में मौखिक स्वास्थ्य में सामाजिक-आर्थिक असमानताएं और सामाजिक उतार-चढ़ाव मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, वयस्कों में सामाजिक-आर्थिक (एसईएस) विशेषताओं और दंत क्षय के बीच संबंधों से पता चला है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति ग्रेडियेंट के साक्ष्य विभिन्न संकेतकों में सुसंगत थे, जिनमें शिक्षा का स्तर, आय, व्यवसाय, सामाजिक वर्ग और क्षेत्र-स्तरीय सामाजिक के उपाय शामिल थे।

तीसरा व्याख्यान क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी (यूके) के डेंटल पब्लिक हेल्थ विभाग के प्रमुख प्रोफेसर मनु माथुर का था, जो मौखिक स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने के लिए वैश्विक प्राथमिकताओं पर केंद्रित था। उन्होंने बताया कि मुँह की बीमारियाँ मानव जाति में सबसे अधिक प्रचलित बीमारी है।

ये बीमारियाँ हमारी और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती हैं। मौखिक विकार गरीब, वंचित और हाशिये पर रहने वाली आबादी को असंगत रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे आबादी में मौखिक स्वास्थ्य असमानताएं पैदा होती हैं। भारत जैसे एलएमआई देशों में मौखिक रोगों का बोझ बहुत अधिक बढ़ रहा है। उच्च शहरी गरीब और ग्रामीण आबादी वाले भारत में मौखिक

स्वास्थ्य में असमानता अधिक होगी। दुर्भाग्य से, इस सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे पर हमारे देश में शायद ही कभी चर्चा की जाती है और न ही यह हमारे स्नातक या स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

चौथा सत्र प्रोफेसर रिचर्ड वाट, डेंटल पब्लिक हेल्थ, महामारी विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन, यूके द्वारा ऑनलाइन मोड में दिया गया था। प्रो. वाट ने मौखिक स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने के लिए समकालीन अनुसंधान प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान मौखिक स्वास्थ्य प्रणालियाँ मौखिक रोगों की वैश्विक चुनौती से निपटने में और न ही मौजूद अन्यायपूर्ण और गंभीर असमानताओं को संबोधित करने में विफल रही हैं। कई एलएमआईसी में मौखिक देखभाल प्रणाली की विफलताएं सबसे गंभीर हैं क्योंकि दंत चिकित्सा सेवाएं अविकसित हैं और अधिकांश आबादी के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण गरीबों और शहरी 'झुग्गी बस्तियों' में रहने वाले लोगों के लिए पहुंच से बाहर हैं।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र में स्व-रोज़गार महिला संघ (SEWA), सामाजिक सुरक्षा की निदेशक डॉ. मिराई चटर्जी ने भाषण दिया। उन्होंने समुदायों को अनुसंधान कार्य में शामिल करने की आवश्यकता और सामुदायिक मानचित्रण के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने समुदायों विशेषकर अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं के उत्थान में हमारे संगठन यानी सेवा के काम पर प्रकाश डाला।

इस सेमिनार में 17 डेंटल कॉलेजों के 75 से अधिक डेंटल पेशेवरों ने भाग लिया। इस सेमिनार के अंतर्गत एक ई-पोस्टर प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के लिए कुल 20 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। प्रत्येक श्रेणी-स्नातक और स्नातकोत्तर में सर्वश्रेष्ठ तीन पोस्टरों का मूल्यांकन विशेषज्ञता के वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा किया गया। विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं उपहार प्रदान किया गया। आयोजन सफल रहा और प्रतिनिधियों ने इसकी खूब सराहना की। सेमिनार ने भारत में मौखिक स्वास्थ्य असमानताओं को संबोधित करने के लिए प्रतिबद्ध लोगों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य किया और मौखिक स्वास्थ्य असमानताओं के पैटर्न, तंत्र और परिणामों को समझने पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्याख्यान आयोजित करके इस सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे पर प्रकाश डाला।

जनसंपर्क कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया